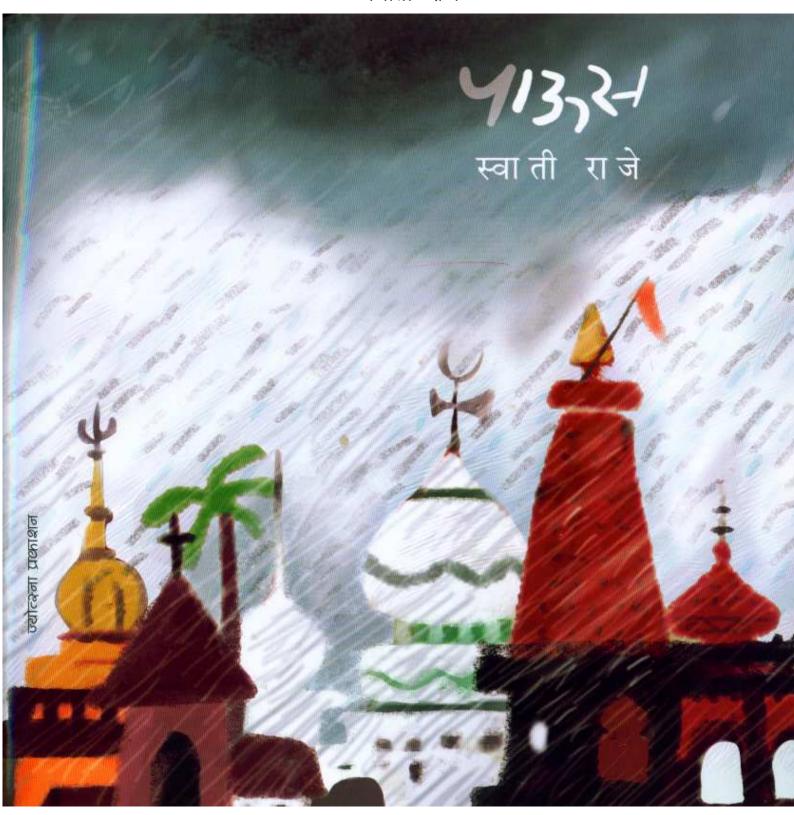
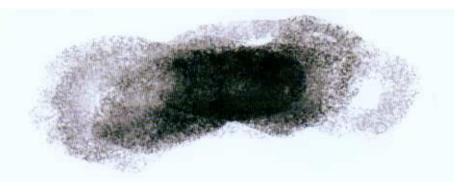
बारिश

स्वाती राजे







पा ऊ स

स्वाती राजे

बारिश

स्वाती राजे

प्रकाशक : मिलिंद ल. परांजपे, ज्योत्स्ना प्रकाशन, 'घवलगिरी' ४३०-३१ शनिवार पेठ, पुणे ४११०३०

मुंबई ऑफिस : मोहन बिल्डिंग, १६२ ज. शंकरशेठ मार्ग, गिरगाव, मुंबई ४००००४

भाषा फाउंडेशन अक्षर, २७/१२ सागर सोसायटी पुणे-मुंबई रोड, वाकडेवाडी पुणे ४११००३

© भाषा फाउंडेशन, २०१२

मुखपृष्ठ व आतील चित्रे : चंद्रमोद्दन कुलकर्णी साहाय्य : राजेश भावसार मांडणी : फाल्गुन ग्राफिक्स

पहिली आवृत्ती : डिसेंबर २०१२

मुद्रक : युनिक ऑफसेट, नऱ्हेगाव, पुणे ४११०४१

मूल्य रुपये साठ ISBN 978-81-7925-322-9 लेखिकाः स्वाती राजे

चित्रः चंद्रमोहन कुलकर्णी

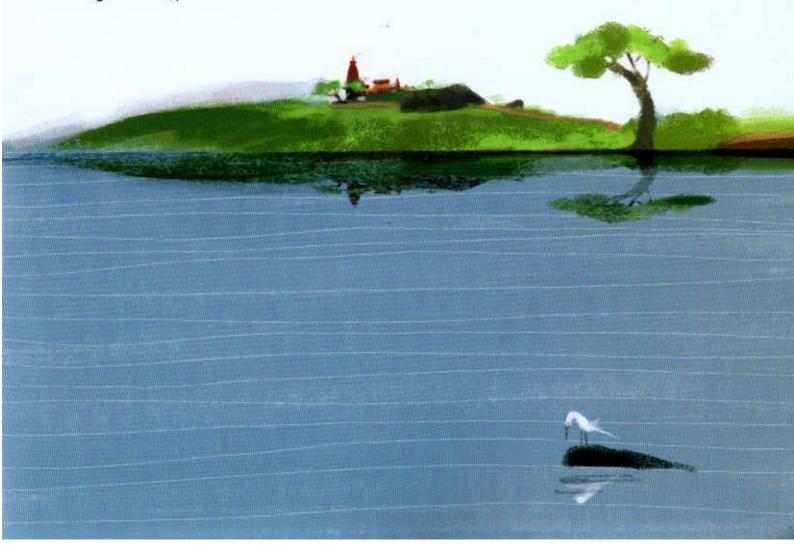
प्रकाशकः ज्योत्सना प्रकाशन, पुणे

आनंदपुर गांव छोटा सा एकदम हरा-भरा।

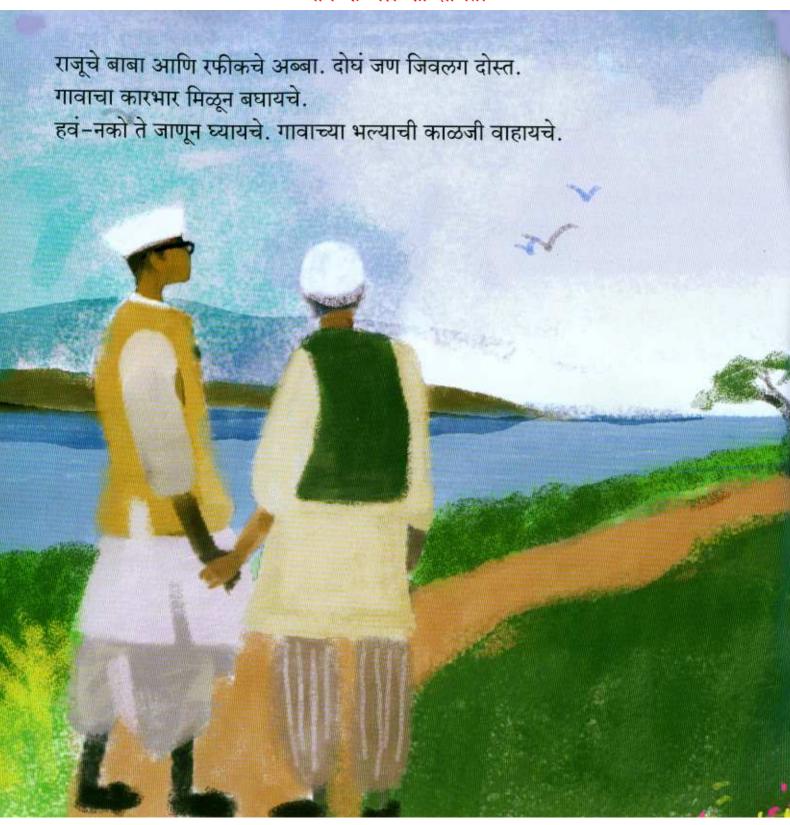
गांव में कलकल बहती नदी फसलों की प्यास बुझाती गांव वाले सुख-चैन से जीते जरूरत के लायक कमा लेते।

आनंदपूर गाव छोटंसं. छान हिरवं हिरवं.

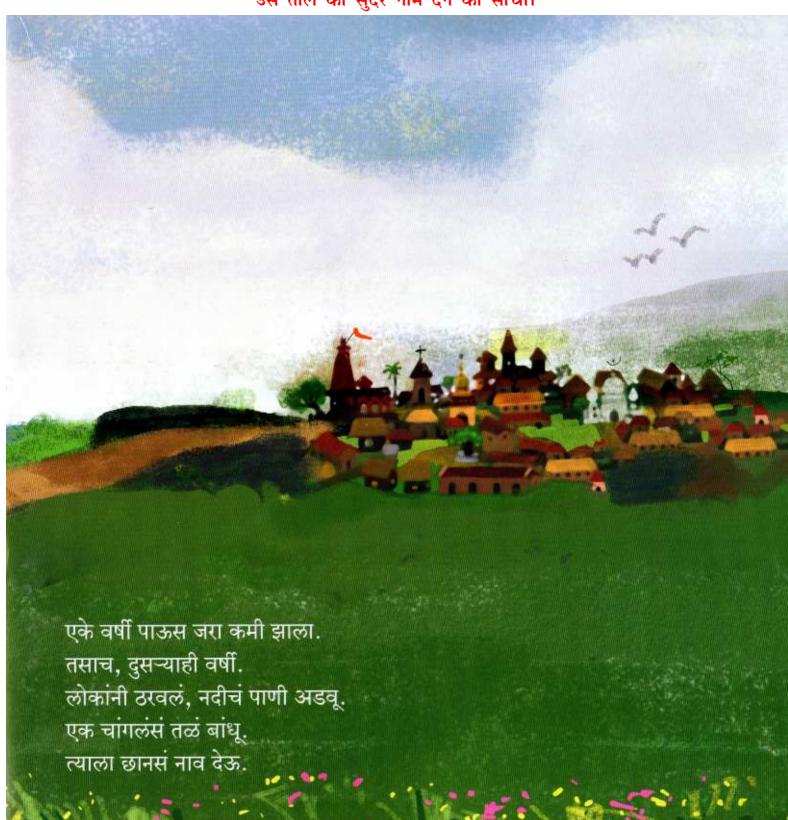
गावाची नदी झुळझुळ वाहायची. पीक-पाणी पिकवत जायची. गावातले लोक सुखानं राहायचे. पोटापुरतं कमवून खायचे.



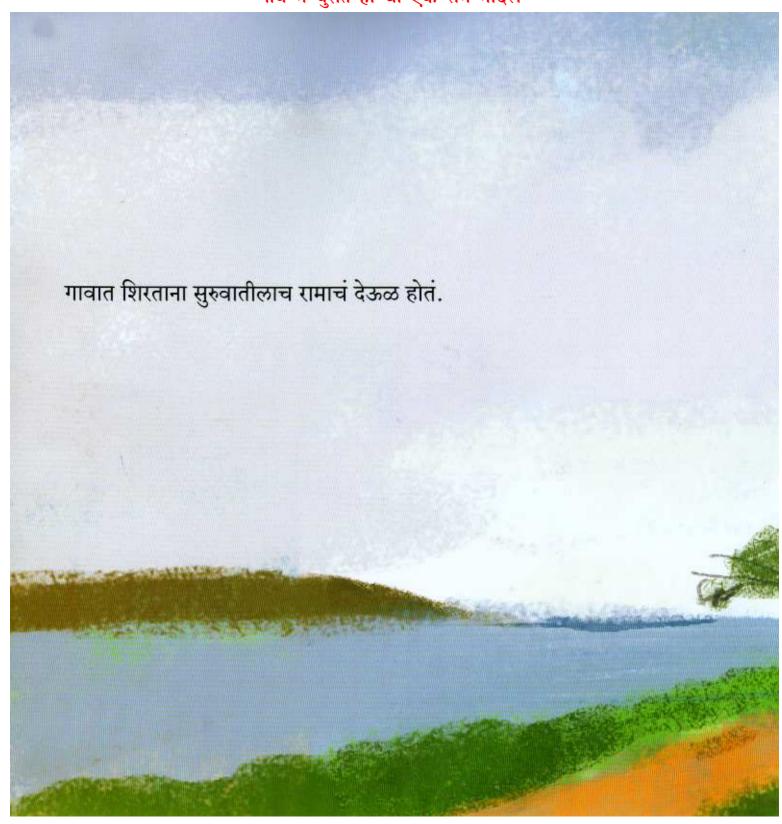
राजू के पिताजी, रफीक के अब्बा, दोनों थे जगरी दोस्त लोगों का ध्यान रखते गांव के भले की सोचते।



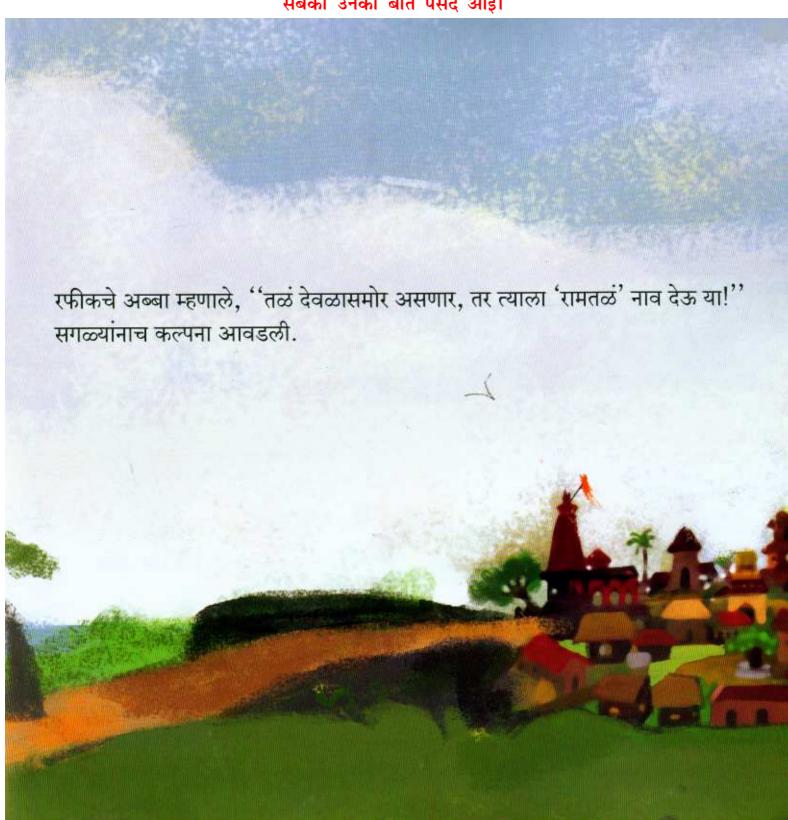
एक साल, बारिश हुई कम
दूसरे साल, वही आलम
लोगों ने नदी को रोक
छोटा ताल बनाने की सोची
उस ताल को सुंदर नाम देने की सोची।



गांव में घुसते ही था एक राम मंदिर।



रफीक के अब्बा ने कहा, 'क्योंकि हमारा ताल मंदिर के पास बनेगा, इसलिए उसे 'राम-ताल' बुलाएंगे!' सबको उनकी बात पसंद आई।



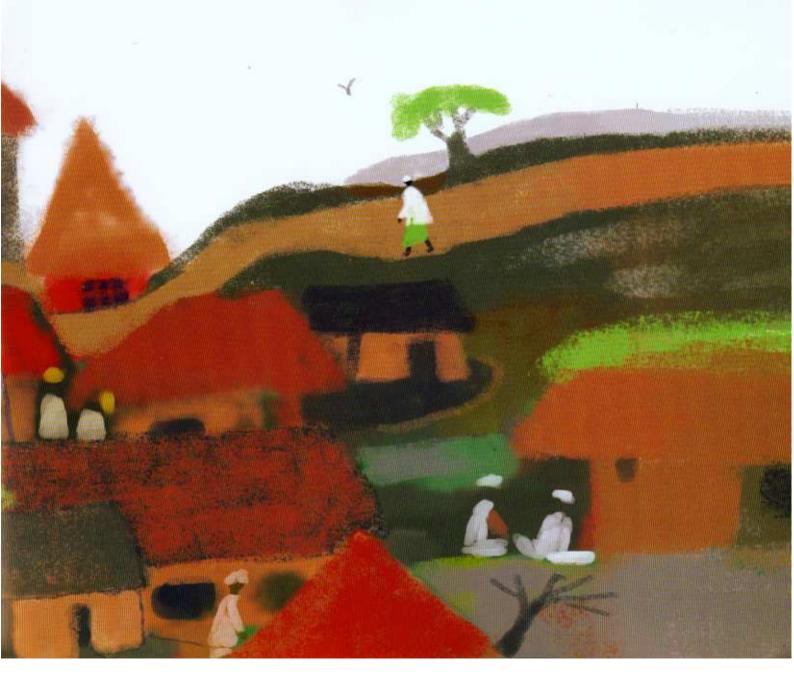
उसी दिन रफीक के मुहल्ले में एक मेहमान आया।

त्या दिवशी रफीकच्या मोहल्ल्यात शहरातून एक पाहुणा आला.



गप्पे मारते हुए मुहल्ले वालों ने उसे नए ताल के बारे में बताया। 'ताल का नाम राम-ताल? राम-ताल क्यों? रहीम-ताल क्यों नहीं? तुम लोग मंदिर को इतना महत्व क्यों देते हो?'

गप्पा मारताना मोहल्ल्यातल्या लोकांना म्हणाला, ''तळ्याचं नाव रामतळं? 'राम'तळं क्यों? 'रहीमताल' क्यों नहीं? तुम्ही 'त्या' लोकांच्या देवाला का मोठेपणा देता?''



महल्ले में ऐसी बात पहले कभी किसी ने नहीं उठाई थी।

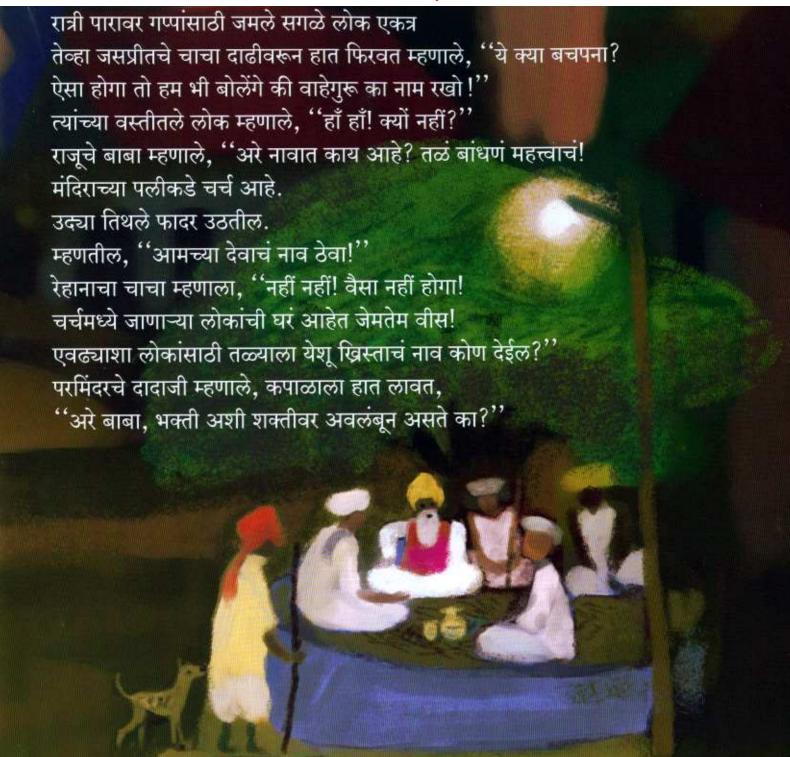
मेहमान ने आगे कहा,
'अगर आज तुमने उन्हें ज्यादा भाव दिया तो कल वो तुम्हारे सिर पर चढ़ेंगे!'

लोग सोच में डूबे।

कुछ लोग कहने लगे, 'बात में कुछ तो दम है।'
दो-चार लोग उठकर रफीक के अब्बा के पास गए और कहा,
 'हमें उनके मंदिर का नाम नहीं चाहिए!'
रफीक के अब्बा की बात अनसुनी कर लोग राजू के पिताजी के पास गए।
'देखो! अगर ताल बना तो उसका नाम होगा रहीम-ताल!'

असा विचार मोहल्ल्यात आजपर्यंत कुणी केला नव्हता. पाहुणा म्हणाला, ''आज त्यांना द्याल मोठेपणा आणि उद्या हेच लोक बसतील तुमच्या डोक्यावर!'' लोक विचारात पडले. काही जण म्हणाले, ''ये भी बात सच है।'' दोन-चार जण उठले. रफीकच्या अब्बांकडे जाऊन म्हणाले, "आम्हाला त्यांच्या देवाचं नाव नको!" रफीकच्या अब्बांचं काहीही न ऐकताच लोक गेले राजूच्या बाबांकडे. ''हे बघा! तळं बांधायचं तर त्याला नाव द्यायचं रहीमताल!''

रात को गांववाले चौपाल पर बातचीत के लिए इकट्ठे हुए।
तब जसप्रीत के चाचा ने दाढ़ी सहलाते हुए कहा, 'यह कैसा बचपना है?
अगर ऐसा हुआ तो हम भी कहेंगे कि उसे वाहेगुरू का नाम दो।'
मुहल्लेवालों ने समर्थन में कहा, 'हां हां! क्यों नहीं?'
राजू के पिता ने कहा, 'अरे भाई नाम में क्या रखा है?
महत्वपूर्ण बात तो ताल बनाना है। मंदिर के उस पार चर्च है।'
कल चर्च के फादर उठ कर कहेंगे, 'हमारे भगवान का नाम रखो!'
रेहाना के चाचा ने कहा? 'नहीं नहीं! वैसा नहीं होगा!
चर्च जाने वालों की संख्या कुल मिलाकर बीस है।
इतने कम इसाई हैं तो ताल को यीशू खिस्त का नाम क्यों देंगे?'
परिमंदर के दादाजी ने माथे पर हाथ रखते हुए कहा,
'अरे बाबा, भला भितत क्या कभी ऐसी शिक्त पर टिकती है?'



परन्तु उनकी बातों पर किसी ने ध्यान नहीं दिया।

सभी लोग बस अपना-अपना राग अलापते रहे। सभी एक साथ मिलकर अपनी बातें कहने लगे।

तभी किसी को लगा, कि जिसकी आवाज जितनी ऊंची, उतना ही अच्छा।

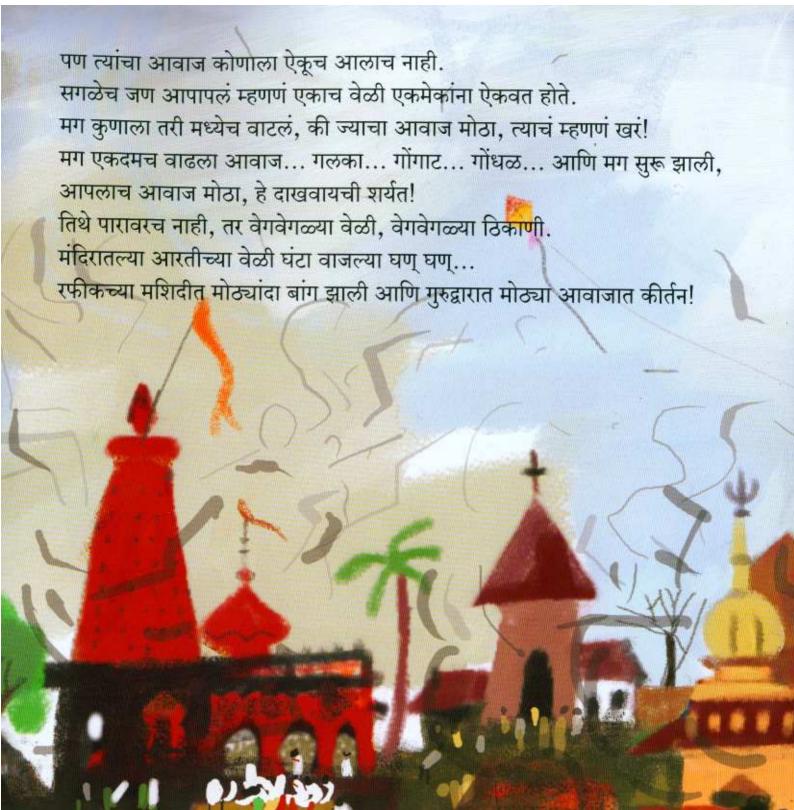
फिर क्या था। लोग ऊंची आवाजों में चीखने, चिल्लाने, शोर मचाने लगे।

और फिर शुरू हुआ ऊंची आवाज में चीखने का कम्पटीशन!

यह चौपाल पर ही नहीं, अलग-अलग वक्त, अलग-अलग ठिकानों पर घटने लगा।

आरती के समय मंदिर की घंटी जोर-शोर से खनखनाने लगी...

रफीक की मिस्जद में ऊंची बांग उठने लगी और गुरुद्वारे में कीर्तन जोरदार आवाज में होने लगा!



राजू ने पतंग उड़ाते हुए कहा, 'इन बड़े लोगों का चीखने से गला दुखेगा!'

मांजे की रील उठाए रफीक ने हंसते हुए कहा, 'फिर वो चुप हो जाएंगे!'

परन्तु कोई भी चुप नहीं हुआ! मंदिर में लोगों का पूरा जमघट इकट्ठा हुआ।

फिर मस्जिद में लाऊडस्पीकर आया और गुरूद्वारे में माईक!

आरती और जोर-शोर से होने लगी।

मस्जिद में उससे भी जोरदार नमाज। और कीर्तन जोर-जोर से होने लगा!

एक-बार, दो-बार, दिन में कई बार...

जसप्रीत ने रफीक से कहा, 'अब लगता है माईक का गला बैठेगा!'

परन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ।

मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, बाजार-रास्ते, गांव के चौपाल, बनिए की दुकान, नदी के घाट, आटे की चक्की, गांव के कुंए पर... आवाजें... आवाजें... आवाजें... जंची! जोर से शोर। बहुत ऊंची आवाजें। पर किसकी? उसका किसी को पता नहीं!

राजू म्हणाला, पतंग उडवताना, ''मोठ्या माणसांचा घसा दुखेल की!''
मांजा धरलेला रफीक म्हणाला, हसून, ''तेव्हा बसतील गप्प!''
पण गप्प कोणी बसलंच नाही! मंदिरात आणखी लोक जमले,
तेव्हा मिशदीत आला लाउडस्पीकर आणि गुरुद्वारात माईक! मग जोरात झाली आरती.
मिशदीत त्यापेक्षा मोठ्यांदा नमाज. आणि आणखी मोठं कीर्तन!
एकदा. दोनदा. तीनदा. खूप वेळा...
जसप्रीत म्हणाली रफीकला, ''आता माईकचाच घसा बसेल!''
पण तोही काही बसलाच नाही!
मंदिर, मिशद, गुरुद्वारा, बाजाराचा रस्ता, झाडाचा पार, वाण्याचं दुकान, नदीचा घाट,
पिठाची गिरणी, गावाची विहीर... आवाज... आवाज... आवाज... मोठा.
आणखी मोठा. खूप मोठा... मोठा; पण कुणाचा? त्याचा निकाल लागलाच नाही!



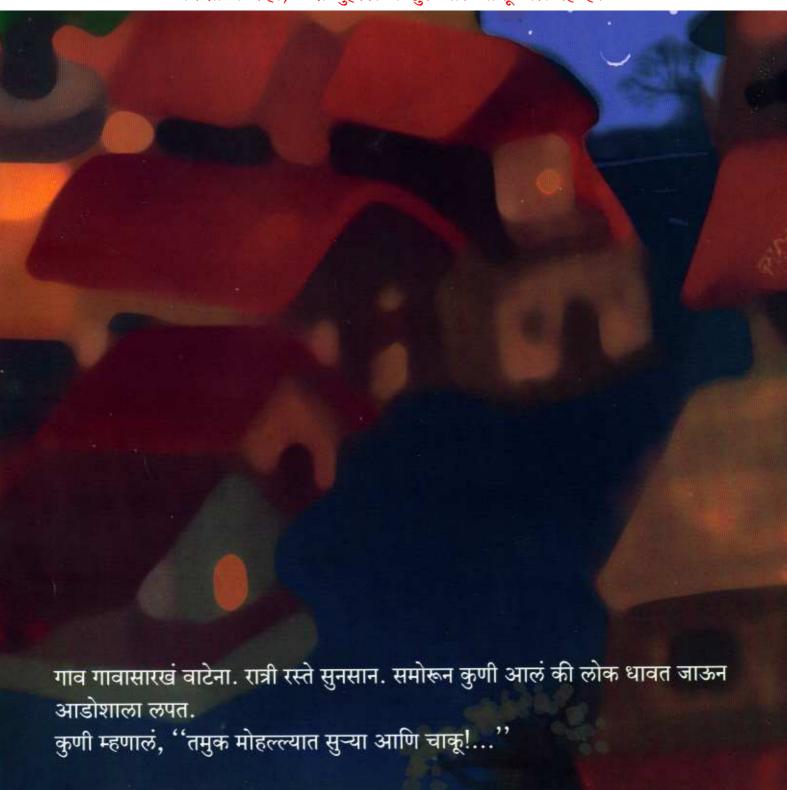
जैसे-जैसे लोगों का शोरगुल तेज हुआ वैसे-वैसे आपस में बातचीत कम हुई... दिन... रात... हफ्ते... पंद्रह दिन... एक महीना... दो... तीन और फिर चार-पांच... छह-सात... आठ महीने पलक झपकते बीते।

आवाज जसा वाढत गेला तसं बोलणं कमी झालं... दिवस... रात्र... आठवडा... पंधरवडा... एक महिना... दोन... तीन... आणि चार-पाच. सहा-सात... आठसुद्धा... महिनेच महिने उलटून गेले.

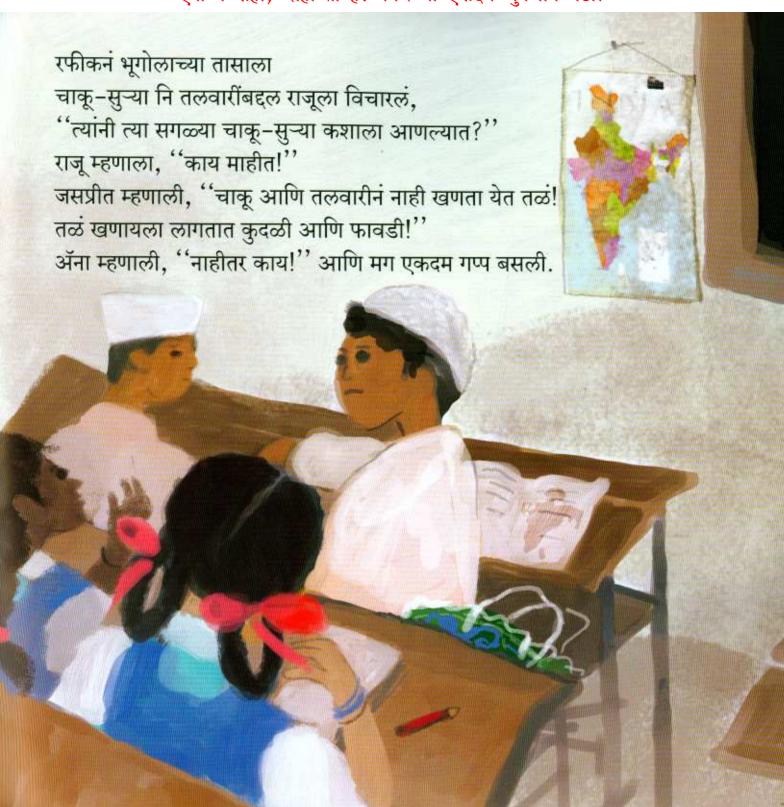
मुहल्लों में लोगों की गपशप बंद हो गई।
अब कोई अपने घर के दरवाजा खुला नहीं छोड़ता।
राजू को जसप्रीत के घर जाने पर मनाही लगी।
बलजीत और रफीक की आपस में खेलने पर रोक लगी।
उस्मान की चाची ने मीना की मां को पहचानना बंद किया।
किवता की मां ने सुरजीत की गाय को घास खिलाना बंद किया।
इस बार रफीक रमजान की खीर राजू के घर लेकर नहीं गया।
और इस दिवाली पर रफीक को शंकरपारे खाने को नहीं मिले।
ऍना के घरवालों ने उसे
इन सब लोगों से दूर रहने को कहा।

पारावरच्या गप्पा बंद झाल्या. घराची दारं उघडी दिसेनात. राजूला जसप्रीतकडे जायला बंदी. बलजितला रफीकशी खेळायला बंदी. उस्मानची चाची मीनाच्या आईला ओळख देईना. कविताची आई सुरजितच्या गाईला घास घालेना. रमजानची खीर रफीककडून यंदा राजूकडे पोचली नाही. दिवाळीच्या शंकरपाळ्या रफीकला मिळाल्या नाहीत. ॲनाच्या घरच्यांनी तिला या सगळ्यापासून लांब राहायला सांगितलं.

अब गांव, पहले जैसा नहीं रहा। सभी रस्ते सुनसान। अगर कोई पास आता तो लोग भाग कर छिपने लगते। किसी ने कहा, 'उस मुहल्ले में छुरे और चाकू चल रहे हैं!'



भूगोल की कक्षा में रफीक ने
राजू से चाकू-छुरी और तलवारों के बारे में पूछा,
'लोग यह सब छुरी-चाकू क्यों लाए?'
राजू ने जवाब दिया?, 'मुझे क्या पता!'
जसप्रीत ने कहा, 'चाकू और तलवार से तालाब की खुदाई तो नहीं होगी!
खुदाई के लिए तो कुदाल और फावड़ा लगेगा!'
ऍना ने कहा, 'सही तो है!' फिर वो एकदम चुपचाप बैठी।



तब तक गर्मी शुरू हो चुकी थी। गर्मी बढ़ी। कुएं सूखने लगे। पेड़ मुरझाने लगे। नदी सूख गई।

दो चुल्लू पानी के लिए लोगों को मीलों चलना पड़ा।

...घड़े ... मटके ... कलश ...लिए।

काले बादलों का इंतजार करते-करते कितने ही दिन बीत गए...

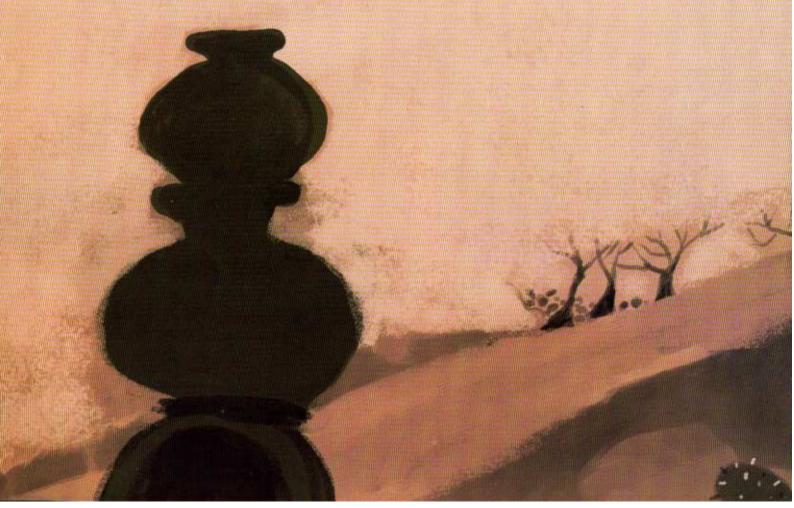
पर बादल नदारद... हरियाली मुरझाई ... सब कुछ नष्ट हो गया!

थरथराती आवाज में एक गांव की बूढ़ी महिला ने कहा, 'भगवान के सामने मत्था टेको!

प्रार्थना करो और अपनी गलती की माफी मांगो!'

बूढ़ी औरत की आवाज सुन सारे गांववाले चुप्पी साध गए!

तोपर्यंत उन्हाळा आला. ऊन वाढलं. विहिरी आटल्या. झाडं वाळली. नदी सुकली. घोटभर पाण्यासाठी मैलामैलाची पायपीट!... कळशी... घागर... मडकी... काळ्या ढगाची वाट पाहण्यात दिवस दिवस निघून चालले... पाऊस काही येईना... गाव मुळी फुलेना... बोलेना... सारं काही बिनसून गेलं! देवळातल्या कीर्तनात, थरथरत्या आवाजात, गावातली आजी म्हणाली, 'घाला साकडं परमेश्वराला! करा प्रार्थना, म्हणावं, चुकलंमाकलं माफ कर!'' आजीचं बोलणं ऐकून सारेच गप्प!



अपनी गलती महसूस कर रहे थे... रफीक के अब्बा, जसप्रीत के चाचा और राजू के पिता!

गलती क्या थी इसका उन्हें आभास था, पर गलती स्वीकारने को तैयार नहीं थे।

फिर उस दिन मंदिर में आरती हुई। बारिश के लिए प्रार्थना हुई, हवन हुआ...

मस्जिद में खास नमाज पढ़ी गई ... और गुरुद्वारे में विशेष कीर्तन हुआ।

ऍना के फादर ने भी गिरजाघर में प्रार्थना की। उसके बावजूद बारिश का कोई नामोंनिशां नहीं दिखा!

रफीक ने स्कूल में राजू से पूछा, 'लोगों की प्रार्थना क्या भगवान वाकई में सुनते हैं?'

ऍना ने कहा, 'ऑफकोर्स!'

जसप्रीत ने पूछा, 'फिर वो बारिश क्यों नहीं करते?'

ऍना ने कहा, 'क्या पता!'

चुकल्यासारखं वाटत होतं... रफीकच्या अब्बांना. जसप्रीतच्या चाचांना, राजूच्या बाबांना! काय चुकलंय ते समजत होतं; पण समजून घ्यावंसं वाटत नव्हतं. मग त्या दिवशी मंदिरात आरती झाली. होमहवन आणि प्रार्थना... पावसासाठी. मशिदीत नमाज... आणि कीर्तनही गुरुद्वारात. ॲनाच्या फादरनी प्रेयरही म्हटली चर्चमध्ये. तरीही पाऊस येईचना! रफीक शाळेत राजूला म्हणाला, ''लोक प्रार्थना करतात, ते देवाला खरंच ऐकू जातं?'' ॲना म्हणाली, "ऑफकोर्स!" जसप्रीत म्हणाली, "मग तो पाऊस का नाही पाडत?" ॲना म्हणाली, "कुणास ठाऊक!"

राजू ने कहा, 'देखो वे कितने ऊपर हैं! आसमान में!
भगवान सुन पाएं इसलिए हमें मिलकर जोर से प्रार्थना करनी होगी!'
रफीक ने पूछा, 'मतलब, हमें बड़े लोगों से भी अधिक जोर से प्रार्थना करनी होगी?'
ऍना ने कहा, 'ऑफकोर्स!'

जसप्रीत ने कहा, 'हमें अपनी प्रार्थना को भगवान तक पहुंचाना ही होगा! इसके लिए क्या करें?'

राजू ने कहा, 'आयडिया!' रफीक को आयडिया एकदम मस्त लगा।

जसप्रीत, गुरुप्रीत, मीनू और ऍना को भी आयडिया पसंद आया।

समय तय हुआ। रात को चुपचाप एक-दूसरे को संदेश भेजे गए। दूसरे दिन स्कूल खत्म हुआ।

घर जाने की बजाए सभी बच्चे गांव के बाहर गए। और वहां एक पहाड़ी पर इकट्टे हुए।

ऍन की बड़ी बहन भी आई। उसका दोस्त फिलिप भी आया। रफीक की बहन आई।

जसप्रीत का मित्र परमजीत आया। तुतलाने वाला लड़का भी आया।

मीनू... महेश... निशा...रेहाना...कंवल सभी को खबर मिली। सभी आए।

प्रार्थना करने का निर्णय हुआ...? पर कौन सी प्रार्थना...?

किस भाषा में ...? और किस देवता की...?

रफीक ने कहा, 'इसमें क्या है? अपनी भाषा में, अपने देवता की!'

सभी बच्चे इकट्ठे हुए। आंख बंद कर खड़े हुए। राजू ने हाथ जोड़कर कहा, 'हे भगवान, बारिश दे!...'

राजू म्हणाला, ''तो केवढा उच! आभाळात! खरं तर आपण जोऽरात प्रार्थना करायला हवी!'' रफीक म्हणाला, ''म्हणजे... आपल्या मोठ्या लोकांपेक्षाही जोरात?'' ॲना म्हणाली, ''ऑफकोर्स!'' जसप्रीत म्हणाली, ''आवाज देवापर्यंत पोहोचवायलाच हवा! काय करायचं?'' राजू म्हणाला, ''आयडिया!'' रफीकला ती भारी आवडली. जसप्रीत, गुरप्रीत, मिनू आणि ॲनालासुद्धा. बेत ठरला. रात्री गुपचूप एकमेकांना निरोप गेले.

दुसऱ्या दिवशी शाळा सुटली. घरी जाण्याऐवजी सगळे जण परस्पर गावाबाहेर निघाले. गावाच्या माळरानावर एकत्र जमले. ॲनाची मोठी बहीण आली. तिचा मित्र फिलिप आला. रफीकची दीदी आली. जसप्रीतचा दोस्त परमजीत आला. बोबडकांदा 'लघू' आला. मिनू... महेश... निशा... रेहाना... कंवल... निरोप पोचले, ते सगळे आले! प्रार्थना करायची ठरली. पण म्हणजे कोणती प्रार्थना...? कुठल्या भाषेत...? आणि कुठल्या देवाला...? रफीक म्हणाला, ''त्यात काय? आपापल्या भाषेत, आपापल्या देवाला!'' सगळे जण एकत्र झाले. डोळे मिटून उभे राहिले. राजू म्हणाला, हात जोडत, ''देवबाप्पा पाऊस दे!...'' रफीक अपने अब्बा की तरह घुटने टेक कर बोला, 'अल्ला हो अकबर... अल्ला...'
जसप्रीत ने जोर से चिल्लाया, 'वाहेगुरू...' सभी एक सुर में बोले, 'बारिश दो!'
भगवान... अल्ला...आसमान के मालिक! हे भगवान, दया कर ... डिअर लार्ड... वाहेगुरू...
बारिश दो... पानी दो... पेड़ों के लिए पानी दो...
खेतों में दाना दो... जानवरों को चारा दो...
चिड़ियों को गाने दो...सभी को पानी दो...। ऍना ने कहा, 'ऑमेन!'
सभी की आवाज में एक ही सुर था...
वो सुर पहाड़ी पर घूमा। फिर गर्म हवा उसे बादलों तक ले गई...
फिर हाथों की अंजुली में बादलों को भर ऊपर आकाश तक ले गई
वो सुर सीधा परमेश्वर के कानों तक पहुंचा...। परमेश्वर हंसा।

रफीक म्हणाला, गुडघे टेकत, अञ्बांसारखा, ''अल्ला हो अकबर... अल्ला...ऽ'' जसप्रीतनं हाक मारली... ''वाहेगुरू...'' सगळे म्हणाले, एका सुरात, ''पाऊस पाड!'' देवा... अल्ला... आकाशातल्या बापा! दयाघना... डिअर लॉर्ड... वाहेगुरू... पाऊस पाड... पाणी दे... झाडासाठी पाणी दे... शेतामध्ये दाणा दे... गुरांसाठी चारा दे... पाखरांसाठी गाणी दे... सगळ्यांसाठी पाणी दे! ॲना म्हणाली, "आमेन!" सगळ्यांचा आवाज एका सुरातला... माळरानावर घुमला. तापलेल्या हवेनं वाहून ढगापर्यंत नेला... ढगानं हाताच्या ओंजळीत भरून उंच उंच आकाशात नेला तो थेट परमेश्वराच्या कानापर्यंत गेला... परमेश्वर हसला.

उसने काले बादलों पर फूंक मारी।

फिर काला बादल खुशी से दौड़ता हुआ गांव तक पहुंचा और वहां रुका।

राजू हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रहा था...

रफीक घुटने टेक कर नमाज पढ़ रहा था...

जसप्रीत कसकर आंखे बंद किए नमन कर रही थी...

ऍना दिल पर हाथ रखे प्रभू का स्मरण कर रही थी...

पहाड़ी पर बच्चों के बीच ठंडी हवा खुशी से बहती हुई निकली।

मंदिर में आराम करते पुजारी के गेरुए वस्त्र पर पानी की एक बूंद पड़ी।

ऊंघते हुए मौलवी की टोपी पर भी एक पानी की बूंद पड़ी।

गुरुद्वारे में आराम करते गुरूजी की दाढ़ी पर भी पानी की एक बूंद पड़ी।

और एक बूंद फादर के पवित्र क्रास से नीचे लुढ़की।



त्यानं काळ्या ढगांवर फुंकर मारली. काळा ढग खुषीनं तरंगत गावापाशी येऊन थांबला. राजू हात जोडून प्रार्थना करणारा...

रफीक गुडघे टेकून नमाज पढणारा...

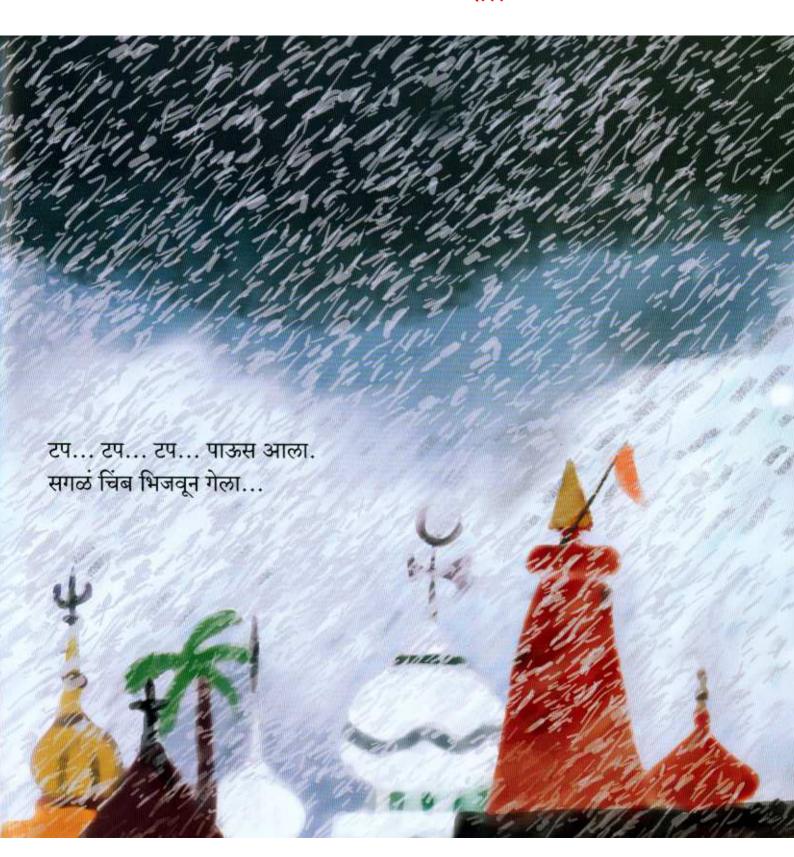
जसप्रीत डोळे मिटून नमन करणारी...

ॲना हृदयावर हात ठेवून स्मरण करणारी...

माळरानावर मुलांमधून गार वारा खुषीनं सळसळत गेला.

मंदिरात 'वामकुक्षी' करणाऱ्या पंडितांच्या भगव्या कफनीत पाण्याचा एक थेंब पडला. डुलकी काढणाऱ्या मौलवींच्या टोपीवर एक ठिबकला. गुरुद्वारापाशी विसावलेल्या गुरूंच्या दाढीवरून पाझरला आणि फादरच्या होली क्रॉसवरून खाली ओघळला...

टप...टप...टप... करती बारिश आई। सब लोग तर-बतर हो गए...



नदी हंसी। मिट्टी भीगी। पानी के झरने बहने लगे। पेड़ हिलने लगे।
गीली पहाड़ी पर बच्चे नाचे। नंगे पांव...
नम आंखों से...भरे मन से...
पूरा गांव पहाड़ी पर इकट्ठा हुआ...
पंडित की गर्दन झुकी। मौलवी का माथा झुका।
गुरू शर्माए। फादर लिज्जित हुए...
सबकी आंखों में आंसू भर आए।
कुदाल-फावड़े इकट्ठे हुए। सभी हाथ एकत्र हुए। सबने एक-साथ मेहनत
की। एक-साथ थके।
उसके बाद गांव के अनाम ताल में हर साल पानी लबालब भरता!

